MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

VIDYAWARTA®

Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC

बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय

बसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

THE VISION STATMENT O THE COLLEGE IS

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता कावले
डॉ.शेख रजिया शहेनाज

२. कहानी विधा

24) मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में नारी चेतना
फिरोज बालसिंग, जाकिर हुसैन गुलगुंदी, धारवाड ||76

25) समकालिन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना
प्रा. नयन भादुले -राजमाने, लातूर ||78

26) सुधा अरोडा की कहानी में स्त्री चेतना
अर्चना रमेशचंद्र बंग-सोमाणी, परभणी ||81

27) उषा प्रियंवदा की कहानियों में नारी चित्रण
बलांडे स्वर्णा तुकाराम, लातुर ||82

28) चित्रा मुद्‌गल की कहानियों में नारी चेतना
डॉ. वायजा कोटुळे, बीड ||84

29) नासिरा शर्मा के कहानियों में स्त्री चेतना
प्रा. यु. ए. बिरादार, नांदेड ||87

30) अलका सरावगी के कथासाहित्य में चित्रित नारी संघर्ष
ज्योती शशिकांत कांबळे, औरंगाबाद ||88

31) मालती जोशी के कथा साहित्य में नारी चेतना
प्रा. कल्याण शिवाजीराव पाटील, नांदेड ||90

32) समकालिन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना
प्रा.डॉ. पवन नागनाथराव एमेकर, नांदेड ||92

33) चित्रा मुदगल की कहानियों में स्त्री चेतना
प्रदीप सोपान खिल्लारे, औरंगाबाद ||94

34) 'और अब' कहानी में नारी चेतना
डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड, देगलूर ||96

35) नारी चेतना की दास्तान 'कठगुलाब'
डॉ. रेविता बलभीम कावळे, हिंगोली ||97

www.vidyawarta.com/ | http://www.printingarea.blogspot.com

[illegible]

निष्कर्ष :

[illegible]

[illegible]

ग्रन्थ सूची :

१. [illegible]
२. [illegible]
३. [illegible]
४. [illegible]
५. [illegible] - डॉ. [illegible]
६. [illegible] - पत्रिका

□□□

25

[illegible] हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना

[illegible]
[illegible]
[illegible]

प्रस्तावना :

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कथा साहित्य में स्त्री चेतना :

[illegible]

से है, जो सामाजिक सीमाओं में बध्द है। हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की अभिव्यक्ति पहली बार मध्ययुगीन भक्ति काव्य में दिखाई देती है। मध्यकाल में मीराबाई के काव्य और जीवन में फूटता हुआ लावा नारी-विमर्श का ही था। वह पंद्रहवी शताब्दी की एक ऐसी विद्रोहिणी प्रतिभा थी जिसने नारी अस्मिता का एक अभूतपूर्व इतिहास रचा था। युगों -युगों से दबी कुचली भारतीय नारी को मर्यादित होकर पूरी शक्ति और खुले शब्दों में जीवित होने का एहसास दिया था। राजघराने की मर्यादा मानी जाने वाली मीराबाई ने जब यह उद्घोष किया होगा, "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई, तो तत्कालीन रुढिवादी समाज में कितने ज्वालामुखी एक साथ फट होंगे। हम सभी उन अमानवीय यातनाओं से परिचित है, जो असली स्वतंत्रता के एवज में मीराबाई ने झेली।"[1]

मीरा बाई के बाद हिंदी कथा जगत में १८८२ ई.में एक अज्ञात लेखिका ने नारी जीवन की व्यथा का बयान 'सीमंतनी उपदेश' में किया जिसका संपादन धर्मवीर भारती ने किया है। इसमें लेखिका ने विधवा नारी के कटु जीवन यातना के बीच जी नारी को चित्रित किया। बीसवीं सदी के आरंभिक दौर में रुढियों को तोडते हुए स्त्री की अनुभूति को शब्दबध्द करने के साहसी निर्णय लेने की क्षमता सुभद्राकुमारी चौहान और महादेवी वर्मा में दिखाई दी। इन दोनों ने अपनी प्रखर भावाभिव्यक्ति से नारी मुक्ति को प्रभावी स्वर दिया। महादेवी वर्मा 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में जहाँ एक ओर स्त्री मन के कोमलमय उद्गार को अभिव्यक्ति देती है वहीं पूर्ण संवेदना तथा साहस से स्त्री शोषण की विभीषिका को भी उद्घाटित करती हैं। इसी प्रकार सुभद्राकुमारी चौहान 'खूब बडी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थीं' की एक उद्घोष के रुप में प्रस्तुत करते हुए नारी मुक्ति को, स्वर को और भी प्रखर रुप प्रदान करती हैं।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यास 'निर्मला' में एक नारी की आत्महत्या से लेकर उसकी मृत्यु तक उसकी लाचारी का वर्णन किया है। निर्मला नामक पात्र अपने पिता के घर, तदोपरांत अपनी उम्र से कहीं अधिक बड़े पति के द्वारा किस प्रकार प्रताडित की जाती है, की कहानी को लेखक ने मर्मांतक ढंग से प्रस्तुत किया है।

कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन में पाए जानेवाले दंशों और तनावों को बड़ी ही सजीवता के साथ चित्रित किया है और नारी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्षरत दिखाया है। 'एक सडक सत्तावन गलियाँ' में बींसरो के माध्यम से नारी के विद्रोही स्वर को मुखरित किया है। अपने सहकर्मी नट-कलाकारों के शोषण का शिकार होती है। किंतु अपने स्वाभिमान की रक्षा करती है और कहती है, "जा... जा... अपने तबेले में सो, इधर रुख किया तो जान सलामत।"[1] उसकी जिजीविषा ही उसे विद्रोहिणी बना देती है।

भगवती चरण वर्मा ने 'चित्रलेखा' उपन्यास में स्त्री के लिए निर्धारित की गई मर्यादाओं और रुढीवादी नैतिकताओं का उल्लंघन कर अपने नियम स्वयं बनाने वाले सशक्त नारी पात्र प्रस्तुत किए। "पुरुष दो विवाह कर सकता है और वह दोनों स्त्रियों से प्रेम कर सकता है फिर स्त्री ऐसा क्यों नहीं कर सकती।"[1]

'टेढे-मेढे रास्ते' में वर्मा जी ने विवाह के सही अर्थ को बताते हुए दांपत्यगत जीवन में स्त्री-पुरुष को समकक्ष रखा है। "... विवाह केवल संतानोत्पति के लिए नहीं है, विवाह स्त्री को गुलामी करवाने के लिए तथा उसकी सेवा करने के बदले उसका भरण-पोषण करने के लिए भी नहीं है। विवाह की मंशा दो प्राणियों में अर्थात स्त्री पुरुष में एक-दूसरे के प्रति पूर्ण सहानुभूति, पूर्ण सामंजस्य, पूर्ण सहयोग है, और ये चीजें तभी संभव है, जब स्त्री-पुरुष, दोनों ही पूर्ण रुपेन विकसित और सुसंस्कृत हों।"[2]

इन कथाकारों के अतिरिक्त अन्य अनेक पुरुष लेखकों ने भी स्त्री-जीवन से जुडे विभिन्न प्रश्नों, उसके संघर्षों, अधिकारों और आकांक्षाओं के लिए प्रयत्न आदि विषयों को अपने-अपने ढंग से चित्रित किया। लेकिन स्त्री-व्यथा के बखान का जितना प्रशंसनीय कार्य महिला लेखिकाओं ने किया, वह उसकी अपनी लडाई आप लडने की सामर्थ्य की घोषणा भी है। स्त्री लेखिकाओं ने स्त्री के पारिवारिक, सामाजिक और दैहिक शोषण के साथ-साथ उसके मानसिक शोषण को अपेक्षाकृत अधिक तीखे स्वर में अभिव्यंजित किया।

आधुनिक काल में स्त्री-विमर्श की संकल्पना को कई पीढियों की स्त्री-लेखिकाओं ने विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक युगीन परिस्थितियों में रखकर स्त्री की बदलती छवि को नए आयाम दिए। महिला लेखिकाओं ने कथा साहित्य के माध्यम से अपने कार्य को सिध्द करने का प्रयास किया।

उर्दू में इस्मत चुगताई ने 'लिहाफ' और 'ठण्डा गोश्त' जैसी कहानियों में मुस्लिम स्त्रियों की इच्छाओं-आकांक्षाओं और मुस्लिम समाज की वर्जनाओं से मुक्ति के लिए संघर्षरत चेतना को दिखाकर नारी को सचमुच जीवित इंसान साबित करने की चेष्टा की है।

इसी तरह तसलीमा नसरीन ने मुस्लिम स्त्रियों की मुक्ति के लिए सही अर्थों में संघर्ष किया है। स्वयं को जोखिम में डालकर 'लज्जा' और 'स्त्री होने के कारण' पुस्तकों में बेबाकी से धर्म-मजहब से उपर उठकर सच को दिखाया और स्त्री-अस्मिता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने का एक सफल प्रयास किया है।

कई लेखिकाओं ने अपने निजी जीवन को आत्मकथा का रुप देते हुए स्त्री-जीवन के अनछुए पहलुओं को भी चित्रित किया और स्वयं को ऐसी लेखिकाओं रुप में प्रतिस्थापित किया, जो सत्य कहने से नहीं डरती, अपने जीवन को खुद एक खुली किताब के समान जीने में विश्वास रखती हैं। इन लेखिकाओं की कोटि में अमृता

प्रितम, कमलादास, अरुधती रॉय आदि लेखिकाओं का नाम अविस्मरणीय है।

इसी प्रकार हिंदी कथा-लेखिकाओं ने भी स्त्री -अस्मिता की राह पर चलते हुए अपना अपूर्व योगदान दिया है। मन्नू भंडारी, उषा प्रियवदा, कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, ममता कालिया, मृणाल पांडे, महाश्वेता देवी, चित्रा मुद्‌गल, मृदुला गर्ग, सिम्मी हर्षिता, मैत्रियी पुष्पा, कुसुम असंल, नमिता सिह, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, आदि जिनमे अग्रणी है। ये लेखिकाएँ आधुनिक हिन्दी साहित्य के कथाफलक पर नया स्त्री विमर्श लेकर प्रस्तुत हुई और स्त्री अस्मिता बोध के साथ छा गई।

पारिवेशगत ढाँचे में परिवर्तन के कारण आई चेतना के चौराहे पर खडी स्त्री की सही तस्वीर मन्नू भण्डारी की कहानियों में उभरती है। मन्नू भण्डारी की कहानियाँ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पूर्ण है और नारी जीवन के यथार्थ का अद्‌भूत विश्लेषण करती है। अपने कथा साहित्य में उन्होने परम्परागत जड और रुढिग्रस्त नैतिकताओं का खण्डन करते हुए वैयक्तिक जीवन की विभिन्न अभिलाषाओं जैसे वयक्तिक जीवन की कामवासना, यौन तृप्ति, कुण्ठा तथा हीनताबोध से मुक्ति आदि को महत्व दिया और भारतीय स्त्री के समक्ष प्रेम विवाह तथा तलाक आदि नए मूल्य सन्दर्भो को प्रस्तुत किया। 'आपका बण्टी' में तलाकशुदा पति-पत्नि और उनकी सन्तान को केन्द्र में रखकर घटनाओं का एक ऐसा जाल बुना है जो मातृ वात्सल्य प्रश्न पर प्रहार करते हुए नारी के सन्दर्भ में पुनः संवेदना का महत्व भी बढा देता है। मन्नू भण्डारी अपने एक साक्षात्कार मे स्वयं कहती है, "बण्टी ... केवल एक परिवार का बच्चा नहीं था। उसका चरित्र समाज में अलग अलग परिवारों के बच्चों से मिलकर बना है और वास्तव में बण्टी मेरे सामने तो मात्र एक व्यक्ति नही रह जाता है। वह एक सामाजिक समस्या बन जाती हैं।"[५]

ऊषा प्रियवन्दा मानवीय स्वतंत्रता की पक्षधर है। उनका 'पचपन खम्बे लाल दीवारें' उपन्यास नारी विमर्श के एक नए मुद्दे पर विचार करता है। यह उपन्यास विवाह संस्था की अनिवार्यता का खण्डन करता है। 'दुखी विवाहित जीवन से अकेले रहना या तलाक लेकर रहना बेहतर है।' तथ्य को यह उपन्यास महत्व देता हैं।

कृष्णा सोबती का प्रखर का स्वर ही चिरप्रचलित पैतृक नैतिकता, मर्यादा और संस्कारों पर प्रहार कर सकता था, जो कि स्त्री का सदियों से दबाए बैठा था। वे हिन्दी की ऐसी सशक्त नारीवादी लेखिका है जिन्होंने अपनी लेखन शक्ति से स्त्री की बदलती हुई स्थिति, उसकी यातना और संघर्ष को स्त्रीवादी परिप्रेक्ष्य से नए रुप में प्रस्तुत किया है। उनकी मित्रो मरजानी की मित्रो यहाँ बेबाकी से उस पितृसत्ताक समाज का विद्रोह करती हैं।

प्रभा खेतान ने सत्री विमर्श में अपनी सशक्त और सकारात्मक उपस्थिति दर्ज करवाई है। 'दि सेकेन्ड सेक्स' का अनुवाद करते समय प्रभा खेतान को इस बात का अहसास हो गया कि सांस्कृतिक अन्तर होने पर भी नारी की समस्याएँ पूरे विश्व में एक जैसी हो है। उनका 'आओ पेपे घर चलें' (१९९०) नारीवादी विमर्श का एक सफल उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिका ने अमरिका के स्त्री जीवन के एकाकीपन को बडी संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। इस उपन्यास की एक पात्र आइलिन औरत की दयनीय दशा की ओर इंगित करते हुए कहती है, "औरत कहाँ नही रोती और कब नही रोती ? वह जितना भी रोती है, उतनी ही औरत होती जाती है।"[६]

इसी तरह ममता कालिया - 'बेघर' उपन्यास मृदुला गर्ग का 'कठ गुलाब' उपन्यास, चित्रा मुद्‌गल का 'एक जमीन अपनी 'उपन्यास, मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक' उपन्यास, नासिरा शर्मा का 'शाल्मली' उपन्यास, राजी सेठ की कहानियाँ जिनमें अपने दायरे, तिसरी हवेली तथा अन्य --- सुनीता जैन का 'बिन्दु' उपन्यास तथा कई अन्य लेखिकाओं के कथा साहित्य में विद्रोह का स्वर दिखाई देता है। "इन लेखिकाओं के यहाँ स्त्री की स्वतंत्रता का रास्ता उसकी देह की मुक्ति के द्वारा किया गया है, जिसके इस्तेमाल का पूरा अधिकार स्त्री का है। वह जब चाहे इस्तेमाल की सकती है।"[७]

सारांश :

अंत में हम कह सकते है कि, नारी विमर्श नारी मुक्ति के प्रयासों का सैद्धान्तिक / वैचारिक आधार है। यह ऐसा विमर्श है जो नारी जीवन के छुए - अनछुए पीडा जगत के उद्‌घाटन के अवसर उपलब्ध कराता है। हिन्दी लेखिकाओं का कथा - साहित्य परम्परागत संस्कारों और नवीन जीवन मूल्यों के परस्पर संघर्ष को रेखांकित करता हुआ और ढंगसे परिणामस्वरूप पैदा हुई जीवन की विद्रुपताओं, विषमताओं और विकृतियों को कलात्मक ढंगसे अभिव्यक्त करता है। तथा स्त्री चेतना निःसन्देह समय की माँग और विशेष रुप से भारतीय परिस्थितियों में परम अपेक्षित थी।

संदर्भ :

१. वाङमय हिंदी पत्रिका, समकालिन साहित्य में स्त्री विमर्श, जया सिंह से.रा. यात्री- साहित्य भारती, हरिश नारायण सिंह (पत्रिका), उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, पृ.११२
२. कमलेश्वर, एक सडक सत्तावन गलियाँ, समग्र उपन्यास, पृ. ३१
३. भगवती चरण वर्मा, चित्रलेखा, पृ. १०६
४. भगवतीचरण वर्मा, टेढे-मेढे रास्त, पृ.१८९
५. मन्नू भंडारी, आजकल, मार्च २००८, पृ.१४
६. आओ पेपे, घर चलें, पृ. ३५
७. ओम प्रकाश वर्मा, समकालिन महिला लेखन, पृ.१९०

❑❑❑

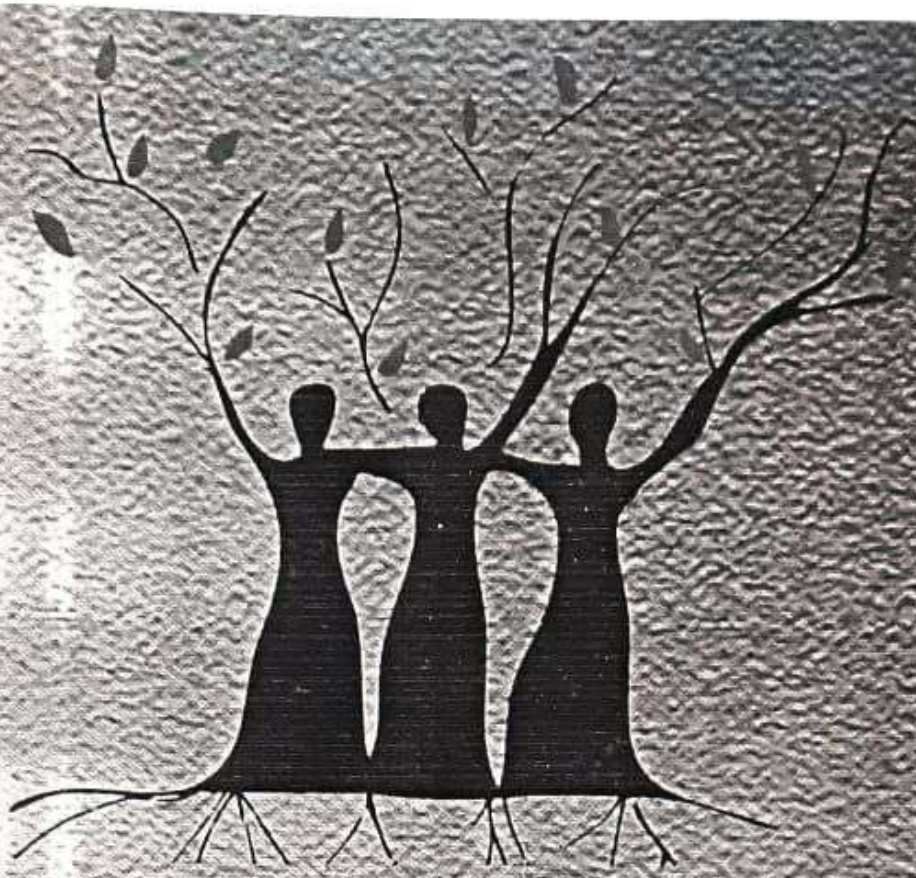

- समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना।
- समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना।
- समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री चेतना।
- समकालीन हिंदी नाटक साहित्य में स्त्री चेतना।
- समकालीन हिंदी आत्मकथा साहित्य में स्त्री चेतना।
- समकालीन हिंदी की अन्य विधाओं में स्त्री चेतना।

Publisher & Owner
Archana Rajendra Ghodke
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

Indexed
Cosmos
IMPACT FACTOR
5.234

IMPACT 6.021 FACTOR

ISSN-2319 931